

जामें अति ही विमल अगाध ज्ञानपानी ।  
 जहाँ नहीं संशयादि पंक की निशानी ॥१॥  
 सप्तभंग जहँ तरंग उछलत सुखदानी ।  
 संतचित मरालवृन्द रमैं नित्य ज्ञानी ॥२॥  
 जाके अवगाहनतैं शुद्ध होय प्राणी ।  
 'भागचन्द' निहचैँ घटमाहिं या प्रमानी ॥३॥

(१०)

धन्य-धन्य है घड़ी आज की, जिनधुनि श्रवणपरी ।  
 तत्त्वप्रतीत भई अब मेरे, मिथ्यादृष्टि टरी ॥टेक॥  
 जड़ तैं भिन्न लखी चिन्मूरत, चेतन स्वरस भरी ।  
 अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, पर में सब परिहरी ॥१॥  
 पाप-पुण्य विधि बन्ध अवस्था, भासी अति दुःखभरी ।  
 वीतराग-विज्ञानभावमय, परनति अति विस्तरी ॥२॥  
 चाह दाह विनसी बरसी पुनि, समता मेघ झरी ।  
 बाढ़ी प्रीति निराकुल पद सों, 'भागचन्द' हमरी ॥३॥

(११)

केवलि-कन्ये, वाङ्मय गंगे, जगदम्बे, अघ नाश हमारे ।  
 सत्य-स्वरूपे, मंगलरूपे, मन-मन्दिर में तिष्ठ हमारे ॥टेक॥  
 जम्बूस्वामी गौतम-गणधर, हुए सुधर्मा पुत्र तुम्हारे ।  
 जगतैं स्वयं पार ह्वै करके, दे उपदेश बहुत जन तारे ॥१॥  
 कुन्दकुन्द, अकलंकदेव अरु, विद्यानन्दि आदि मुनि सारे ।  
 तव कुल-कुमुद चन्द्रमा ये शुभ, शिक्षामृत दे स्वर्ग सिधारे ॥२॥  
 तूने उत्तम तत्त्व प्रकाशे, जग के भ्रम सब क्षय कर डारे ।  
 तेरी ज्योति निरख लज्जावश, रवि-शशि छिपते नित्य विचारे ॥३॥

भव-भय पीड़ित, व्यथित-चित्त जन, जब जो आये शरण तिहारे।  
छिन भर में उनके तब तुमने, करुणा करि संकट सब टारे॥४॥  
जब तक विषय-कषाय नशै नहीं, कर्म-शत्रु नहिं जाय निवारे।  
तब तक 'ज्ञानानन्द' रहै नित, सब जीवन तैं समता धारे॥५॥

(१२)

धन्य-धन्य जिनवाणी माता, शरण तुम्हारी आये।  
परमागम का मन्थन करके, शिवपुर पथ पर धाये॥  
माता दर्शन तेरा रे! भविक को आनन्द देता है।  
हमारी नैया खेता है॥१॥

वस्तु कथंचित् नित्य-अनित्य, अनेकांतमय शोभे।  
परद्रव्यों से भिन्न सर्वथा, स्वचतुष्टयमय शोभे॥  
ऐसी वस्तु समझने से, चतुर्गति फेरा कटता है।  
जगत का फेरा मिटता है॥२॥

नय निश्चय-व्यवहार निरूपण, मोक्षमार्ग का करती।  
वीतरागता ही मुक्तिपथ, शुभ व्यवहार उचरती॥  
माता! तेरी सेवा से, मुक्ति का मार्ग खुलता है।  
महा मिथ्यातम धुलता है॥३॥

तेरे अंचल में चेतन की, दिव्य चेतना पाते।  
तेरी अमृत लोरी क्या है, अनुभव की बरसातें॥  
माता! तेरी वर्षा में, निजानन्द झरना झरता है।  
अनुपमानन्द उछलता है॥४॥

नव-तत्त्वों में छुपी हुई जो, ज्योति उसे बतलाती।  
चिदानन्द ध्रुव ज्ञायक घन का, दर्शन सदा कराती॥  
माता! तेरे दर्शन से, निजातम दर्शन होता है।  
सम्यग्दर्शन होता है॥५॥